"जोगी"

- "सरमै दीआ मुंद्रा कनी पाई जोगी खिंथा करि तू दइआ । आवण जाणु बिभूति लाई जोगी ता तिनि भवण जिणि लइआ । ऐसी किंगुरी वजाई जोगी । जितु किंगुरी अनहद वाजे हरि सिउ रहै लिव लाई । सतु संतोख पतु करि झोली जोगी अंमृत नामु भुगति पाई । धिआन का करि डंडा जोगी सिंडी सुरति वजाई । मनु द्रिड़ करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई । काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी

ता नामु पलै पाई । इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी न सचु पलै पाई । इतु किंगुरी साति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाई । भउ भाउ दुइ पत लाई जोगी इहु सरीरु करि डंडी । गुरमुखि होवहि ता ततो वाजै इन बिधि त्रिसना खंडी । हुकमु बूझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए । सहसा तूटै निरमल होवै जोग जुगति इव पाए । नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाई । सतिगुर नालि तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाई । एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु करहि । ग्रिह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी आपणा हरि प्रभु लहहि । इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोग वडा त्रिसना माइआ । अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाई गवाइआ । हरि का नामु अउखधु है जोगी जिसनो मनि वसाऐ । गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए । जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिसनो नदरि करे सो पाए । अंतरि बाहरि एको वेखै, विचहु भरमु चुकाए । विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाई । कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाई ।"

(3-908)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक